भगवत् कृपा

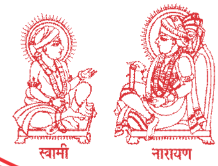

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-1, अंक-5	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी	वार्षिक चन्दा-10.00
बुधवार, 12 अक्टूबर' 77	मानद सहसम्पादक: डॉ. महेन्द्र दवे-श्री विमल दवे	प्रति अंक : 1.00

कृपावतार स्वामिश्री सहजानंदजी

समाधि प्रकरण

सद्. रामानंदस्वामी के स्वधामगमन के बाद सहजानंदस्वामी सम्प्रदाय का जो परमोत्कर्ष कर रहे थे, महान भावि का जो निर्माण कर रहे थे और अद्भुत प्राणशक्ति का जो आह्वान दे रहे थे उस से वे एक अवतार पुरुष हैं इस की प्रतीति शीघ्र ही सब को होने लगी। संसार में दिव्यता का अवतरण हो इस के लिए इन का यह महान और अविरत पुरषार्थ चल रहा था। वह परमेश्वर स्वयं सर्वप्रकार की दैवी संपत्-विभूतियों के प्रभु थे, अपरिमित ऐश्वर्य से सम्पन्न थे और योग में पारंगत थे यह उन्होंने स्वयं समाधिप्रकरण द्वारा सब को ज्ञात करवाया।

उनके स्पर्श से, चलते समय उन के खड़ाऊं से जो शब्द निकलता था इससे, इन की छड़ी, पुष्प, हार, वस्त्र या अलंकार के स्पर्शमात्र से और कभी-कभी इन का चिंतन से योगीजनों को दुर्लभ ऐसी समाधि हजारों व्यक्तिओं को होने लगी थी और समाधि में सब अपने अपने इष्ट देवता के दर्शन करते थे। किसी-किसी मुमुक्षुओं को तो भगवान के चौबीस अवतार श्रीजी महाराज की मूर्ति से प्रकट होते हुए और पुनः उसमें विलीन होते हुए दिखाई पड़ते थे। प्रायः मुमुक्षु ऐसी अवस्था तब प्राप्त करते हैं जब वह अष्टांगयोग की चरम स्थिति निर्विकल्प समाधि में पहुंचता है और जब उनकी सब वृत्तियां प्राणसहित षट्चक्र को भेद कर ब्रह्मरन्ध्र में प्रविष्ट होती हैं। वैदिक कालीन मुनि लोग इस प्रकार की समाधि में कालवंचना कर सकते थे। किन्तु प्राणसहित वृत्तियां ब्रह्मरन्ध्र में अधिक समय टिकती नहीं है, तुरन्त नीचे उतर आती है। सहजानंदस्वामी तो जिन-जिन को समाधि करवाते थे उन सब को अपनी दृष्टि से-कृपा से निर्विकल्प भाव में घंटों तक, दिनों तक, महिनों तक स्थिर कर देते थे। लोज, मांगरोल, लोया, नागडका आदि गांवों में समाधि के जो प्रयोग हुए उस से लोगों की भारी भीड़ मच गई। सब को सहज समाधि लग जाती थी और दो-तीन महीनों के बाद मुमुक्षुओं की आवश्यकतानुसार श्रीजी की दृष्टि से या उनकी छड़ी के स्पर्श से वे समाधि से जागृत हो जाते थे। इस कारण लोग अब सहजानंस्वामी को 'सद्यः समाधिस्थिति कारकः' के नाम से पहचानने लगे !

वैसे ही सहजानंदस्वामी नयनकरुणापूर्ण थे। उनकी वाणी अमृतमयी थी। उनका समग्र अस्तित्व दिव्य प्रेम की चमक से चमक रहा था। अतः इस प्रकार के विभूतिमान पुरुष के दर्शन से किसी को भी प्रेमाकर्षण होना स्वाभाविक था। उन के कमलनयन के एक कटाक्ष से प्रेमानंदस्वामी किस प्रकार आकर्षित हुए थे उसकी

अनुभूति उन्होंने अपने काव्य में अभिव्यंजित की है। भूमानंदस्वामी ने भी ऐसी अनुभूति का महिमागान 'चपला नैनां' कह कर किया है। ऐसा था सहजानंदस्वामी का प्रभाव! किन्तु एक शुद्ध-सात्विक, उच्च कोटि का प्रभाव था। यह कोई मोहकविद्या या जादु-टोना नहीं था।

श्रीजी महाराज ने स्वयं इस समाधि के बारे में लिखा है—

'जीवों के कल्याण के लिए भरतखंड में भगवान अवतार धारण करते हैं। ...इस भगवान की मूर्ति देखने में तो मनुष्यकृति के समान लगती है, किन्तु वह अतिशय अलौकिक मूर्ति होती है, जिस प्रकार पृथ्वी पर अनेक प्रकार के पाषाण खंड होते हैं, किन्तु चुम्बकीय पाषाण विशिष्ट प्रकार के होते हैं। इस प्रकार के शिलाखंडों वाले चट्टान के पास यदि नौकाएं जाती हैं तब नौका की लोहे की कील को वह खींचता है; ठीक उसी प्रकार भगवान की मनुष्याकृति जीवों को अपनी ओर खींचती है, फिर यह मूर्ति राजा के रूप में हो या साधु के रूप में।... जीव जब उस मूर्ति का श्रद्धापूर्वक हृदय से दर्शन करते हैं तब उन की इंद्रियां भगवान की ओर आकर्षित हो जाती हैं और स्वाभाविक समाधि हो जाती है। जब बहुत जीवों को अपनी ओर उन्मुख करने की भगवान की इच्छा होती है तब तो अभक्त जीव हो या पशु हो-भगवान को देख कर उसे समाधि हो जाती है।'* इस प्रकार की समाधि को कृपासमाधि कही जाती है।

सहजानंदस्वामी को देखकर ऐसी समाधि अनेकों को हो जाती थी। इस में हिंदु थे, मुसलमान थे, पुण्यशील थे, पापी थे—इतना ही नहीं, चिड़िया, कबूतर, मोर, बंदर जल में मछलियां आदि को भी समाधि हो जाती थी।

'धोराजी' में महाराज ने चार्वाकपंथी नास्तिकों को ईश्वर ही स्थावरजंगमात्मक सृष्टि का रचयिता है ऐसा उपदेश दिया और सब की नास्तिकता नष्ट करने के लिये उन को समाधि करवाई, जिस में नर्क के कुंड और यमयातना सहन करते हुए पापी जीवों का दुःख दिखाया। दूसरी ओर इन्होंने आस्तिकों को भी बैकुंठ, गोलोक श्वेतद्वीप, बद्रिकाश्रम, ब्रह्मपुर आदि स्थान दिखाये और अपना पूर्ण पुरुषोत्तमरूप का परिचय करवाया।

'अगतराई' गांव में पर्वतभाई को खेत में हल चलाते हुए विचार आया कि—नृसिंह अवतार कैसा होगा? बस इस विचार के साथ-साथ श्रीजी महाराज के दिव्यस्वरूप के दर्शन हुए और उस दिव्यस्वरूप में से चौबीस अवतार प्रगट हुए और फिर उनमें ही विलीन हो गये। इस दर्शन से पर्वतभाई को निश्चय हो गया कि सहजानंदस्वामी पूर्ण पुरुषोत्तम हैं। इसी प्रकार 'मांगरोल' में स्वरूपानंदस्वामी को पहले कृष्णस्वरूप का दर्शन करवाया और इसके बाद अक्षरधाम में अपने दिव्य पुरुषोत्तम स्वरूप का दर्शन करवाया था।

उस समय की बात—एक पठान सज्जन मक्का-मदीना की यात्रा करके जूनागढ़ जा रहा था। वह 'झींझावदर' गांव के पास से गुजरा तब उस के सब संकल्पों का शमन हो गया और अंतर में अनुभूत शांति एकदम छा गई। उसने सोचा की मक्का-मदीना की हजयात्रा करने के बाद भी मुझे जो शांति नहीं हुई थी, वह यहां हुई; अतः निश्चित इस गांव में कोई प्रतापी पुरुष रहते होंगे। यह सोच कर उसने गांव में प्रवेश किया और चोपाल पर बैठे हुए काठी लोगों को पूछा तो उत्तर मिला की इस गांव में इस समय खुदा का अवतार स्वरूप सहजानंदस्वामी है। यह सुनकर वह महाराज को मिलने गया और दर्शन करते ही पठान को समाधि हो गई। समाधि में एक लाख अस्सी हजार सन्त और चालीस पैगम्बरों का दर्शन हुआ और ये सब के सब सहजानंदस्वामी की स्तुति कर रहे थे। पठान को दृढ़ निश्चय हो गया कि सहजानंदस्वामी परमात्मास्वरूप हैं और उसने खुदाताला के रूप में स्तुति की।

दूसरे एक समय की बात है-महाराज 'माणावदर' में थे और इनको अपनी संगीतविद्या से प्रसन्न करने के लिये जूनागढ़ के कुछ एक संगीतशास्त्री आये थे। संगीतविद्या के अनेक भेद, ताल और स्वरवैविध्य की मिलावट करके इन्होंने गान किया। ऐसा अद्‌भुत गान सुनकर श्रीजी महाराज अत्यन्त प्रसन्न हुए और प्रमुख संगीतकार (मंडली के अध्यक्ष) गांधर्व का अवतार है यह जानकर उन्होंने उनको समाधि करवाई और अक्षरधाम में अपनी दिव्यमूर्ति का दर्शन करवाया। समाधि से जागृत होते ही संगीतकार ने श्रीजी महाराज का दिव्य स्वरूप पहचाना और प्रार्थना की—'मुझे आप अन्तेवासी साधु बनाकर सेवा में रहने दीजिए।' उन की इस प्रार्थना की स्वीकृति करके सहजानंस्वामी ने उन्हें दीक्षा दी और

* वच. वड़ताल प्रकरण-13

उनको ‘देवानंदस्वामी’ नाम दिया गया। देवानंदस्वामी अद्‌भुत संगीतज्ञ और कवि थे। दुर्लभ मनुष्यदेव और वैराग्य इन विषयों को लेकर इन्होंने अनेक पद लिखे हैं। गुजरात के महाकवि नानालाल के पिताजी दलपतराम जो स्वयं कवि थे-उन के गुरु देवानंदस्वमी हैं।

‘करियाणा’ गांव में महाराज को वहां के प्रेमी सत्संगीभक्त ‘काला मकवाणा’ ने बांसुरी सुनाई, श्रीजी अत्यंत प्रसन्न हुए और वरदान मांगने को कहा। तब इन्होंने कहा कि आपने जैसी बांसुरी कृष्णावतार में बजाई थी वैसी बांसुरी सुनने की मेरी हार्दिक इच्छा है। यह सुनकर श्रीजी सारी मण्डली को ‘कालुभार’ नदी के तट पर ले गयेऔर मकवाणा की बंशी लेकर पांव की छटा श्रीकृष्ण के समान कर के ऐसा अद्‌भुत बंशीवादन किया कि नदी के जल स्तंभित हो गये, मछलियों को समाधि हो गयी। सारी मंडली को स्वाभाविक समाधि लग गई और इन्हें समाधि में वृंदावन में वंशी सुनाते हुए श्रीकृष्ण का दर्शन हुआ। वे सब जब समाधि से जागृत हुए तब श्रीजी के सर्वोपरि दिव्यस्वरूप देखकर असाधारण, अति, अपार आनंद में मग्न हो गये और इन्हें श्रीजी के परमात्मस्वरूप का विश्वास हो गया।

—क्रमशः

❋ ❋ ❋

दिल्ली में प.पू. काकाजी का स्वागत समारोह

रविवार ता. 11-9-1977 का उज्जवल प्रभात योगी डिवाईन सोसाइटी, दिल्ली में अत्यन्त मांगल्यपूर्ण वातावरण लेकर आया। प.पू. काकाजी विदेश की कल्याण यात्रा की समाप्ति कर के देश में वापस आये और बम्बई में उनका भव्य स्वागत हुआ वह समाचार हम दे चुके हैं। प.पू. काकाजी दिल्ली में पधारने वाले हैं यह सुनकर दिल्ली निवासी आत्मीय भक्तजनों में अपूर्व हर्ष छा गया था और यह मुखरित हुआ 11 तारीख के शुभदिन। इसके पूर्व प.पू. काकाजी का स्वागत दिल्ली के पालम विमानी अड्डे पर श्री प्रफुल्लभाई, श्री जानी, श्री पकाई, श्री जनार्दनभाई और श्री जयस्वाल परिवार ने किया था।

इस प्रसंग पर पू. महेशभाई और पू. ज्ञानस्वरूप-स्वामिजी ने सुन्दर कलात्मक हार बनाया था, जो प.पू. काकाजी को अर्पण किया था दिल्ली के सत्संगसमाज की ओर से श्री आर.के. पटेल साहब ने। गणमान्य व्यक्तियों ने प्रवचन देकर प.पू. काकाजी का आत्मीयपूर्ण स्वागत किया और प.पू. काकाजी ने अपने आशीर्वादात्मक प्रवचन में अपने विदेशप्रवास के संस्मरण रोचक शैली में कह कर पश्चिम के युवक-युवतियां तथा व्यक्तियों में धार्मिकता का जो संचार हो रहा है वह हृदयंगम बात की। यह अनुभव भारतीय आध्यात्मिकता के रहस्य का द्योतक है। प.पू. काकाजी को अजस्र, सरल और सतत गतिमान भाषा में आज आह्लादक दिव्यता आ गई थी जिसका अनुभव उपस्थित सब भाई-बहनों को हुआ।

❋ ❋ ❋

शरद् पूर्णिमा

(मू.अ.मू. * गुणातीतानंदस्वामी का प्राकट्‌यदिन)

अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण संप्रदाय में शरद् पूर्णिमा एक अत्यंत महत्वपूर्ण दिन है क्योंकि उस दिन मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी का इस धरातल पर प्राकट्‌य हुआ था। सनातन धर्म का सतत प्रवहमान अखंड, अविनाशी और चैतन्यपूर्ण विचारप्रवाह साकार ब्रह्म के रूप में गुणातीतानंदस्वामी के रूप में प्रकट हुआ और यावच्चन्द्रदिवाकरो अमर बन गया। इस शरद् पूर्णिमा के दिन हमारा उन को कोटि-कोटि वंदन हो।

गुणातीतानंदस्वामी के अस्तित्व और व्यक्तित्व से इस पृथ्वी पर परम तत्त्व ने स्वयं चैतन्य रूप धारण किया था। इसके पीछे एक निश्चित उद्देश्य था और यह उद्देश्य श्रेयार्थी साधक को आत्यन्तिकी साधर्म्य-मुक्ति दिलवाने का था। साधक किसी भी धर्म का अनुसरण करता हो, गुणातीतानंदस्वामी के अवनी पर आगमन से अब उसके लिये ब्रह्म का विशिष्टाद्वैत स्वरूप का साक्षात्कार करके ब्राह्मीस्थिति प्राप्त करके जीवनमुक्ति सिद्ध करना हस्तामलकवत् हो गया है। वह स्वयं अक्षरधाम का अखंड आनंद में लीन हो सकता है और अन्य को भी ऐसा आनंद प्रदान करवा सकता है।

श्रीजी महाराज ने गुणातीत स्वरूप की यह अमर भावना अपने-अपने इष्टदेव के प्रगटस्वरूप में प्राणीमात्र

---

* मू.अ.मू.—मूल अक्षरमूर्ति

के प्रति अत्यंत करुणा के कारण जगत् को प्रदान की। आज भी गुणातीतानंदस्वामी की सरलता, नम्रता, ऋजुता, प्रेम और कारुण्य की भावना, प.पू. स्वामिश्री, प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. महंतस्वामी और प.पू. प्रमुखस्वामी जैसे व्यक्तिस्वरूपों के माध्यम से सतत विद्यमान है। शरद् पूर्णिमा का दिन इस प्रकार मंगल दिन है।

तो इस ता. 26 अक्तूबर को शरद्पूर्णिमा के दिन हम सब भक्त सहित भगवान की, अक्षरपुरुषोत्तम की युगल उपासना के परम तत्त्वों की प्रार्थना करें कि परात्पर स्वरूप के ऐसे प्रत्यक्ष स्वरूपों में सबको परिपक्व निष्ठा हो और हम सब परात्परस्वरूप की अनन्तता का परमानंद का सुख प्राप्त करें।

■

भक्तों से निवेदन

'भगवत्कृपा' 'The Divine Grace' सत्संग पत्रिका के चार अंक प्रकाशित हो चुके हैं। यह पांचवां अंक है। इस पत्रिका की विशेषताओं से अब आप भलीभांति परिचित हैं। आत्मकल्याणकारी, पठन-पाठन वास्तव में संतसमागम समान हितकारी है। अतः आप से प्रार्थना है कि आप 1977 का वार्षिक शुल्क 10.00 रुपये प्रकाशन कार्यालय पर शीघ्र भेजने की कृपा करें तथा अन्य सज्जनों को भी इस पत्रिका के ग्राहक बनाकर इस धार्मिक संस्थान की प्रगति में अपना योगदान दें। कृपया अपने पत्रों पर, मनीआर्डर कूपन पर पूरा नाम व स्पष्ट पता अवश्य लिखें।

पत्रिका की गौरवान्वित स्थिति के निर्माण में हमें आपका पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा, इस विश्वास के साथ।

—सहसम्पादक

Mul Akshar Brahman[1] Gunatitanand Swami and Eternal Bliss

Lord Swaminarayan gave highest boon to mankind in the form of continuous spiritual hierarchy of supremely realized saints or satpurushas.[2] The manifestation of the divinity or the transmission of the divine power is a continuous process in Swaminarayan Faith or in the creative philosophy as advocated by Lord Swaminarayan.

His Divinity Yogiji Maharaj was the last divine embodiment of our age, who established several yoga and youth centres- thus emancipating millions of people to enjoy mental peace, happiness, power and bliss in the life. The most auspicious and memorable day is Sharad Purnima[3] when the Supramental Being of the light – The transcendental Reality manifested in the human frame as Gunatitanand Swami. The same divine Consciousness has been maintained and will be maintained in future as a continuous process of manifestation of divinity in the human form as supremely realised souls-satpurshas. By Yogiji Maharaj's infinite love and grace such transmission of the divine power has resulted in the awakened and enlightened Jeevanmuktas[4] and the most fortunate part was in the form of recognition and acceptance of such enlightened and fully emancipated divine entities thro' whom the transformation of the crude nature into the

1. Transcendental Eternal Reality.
2. Saints who have established rapport with God.
3. 15th day of bright half of month Ashwin of Hindu calendar.
4. One who is totally liberated in this very body in this very life.

divine nature and divine life has been continued at various centers.

Normally all human beings in their day to day life desire and seek satisfaction and pleasure in the external world. Instead of making human beings happy, contented and blissful such sensual satisfactions and pleasures actually turn them away from their real Self or Being and only a mechanical life is lived by them without any vision or reality. These are temporary pleasures which do not lead to real happiness. Only the eternal entities can give eternal peace, happiness joy and bliss. If we seek that real and true happiness and joy we have to inevitably resort to the eternal entities wherever they are. Supremely realised saints or satpurushas have permanent communion with the supramental reality, hence overflowing infinite joy, happiness and bliss can result by our association with them. This is the essance of teachings of all religions and this has been made easy and common for all people by Lord Swaminarayan in insisting on the following three itmes:

1. Shikshapatri: Covering all phases of life His commandents for various people in this small booklet would ward of all the troubles if carefully observed and adhered to.

2. Santsamagam1: Satsanga through supremely realized saints is an armour and foretress to guard against all temptations and unfavourable forces of the material world, thus giving mental peace and leading to self realization for enjoying eternal bliss.

3. Surrending: By the commands of saints surrending to Almighty gives liberation to soul in bondage.

Principles of all religions in essence are the same, but how to follow and realise them easily in our confused and complicated daily life is the most difficult part. Without transcending wordly desires, ego sense and the crude nature human beings can never have the eternal joy, power and bliss. Lord Swaminarayan has paved the way-the simplest, easiest and realistic path – i.e. santmarg. In our daily life, therefore, we must meditate and pray with an open mind for entering and penetrating into this divine consciousness which has been made extremely easy and simple by above 'santmarg' open for all without any distinction of caste, creed, colour and sect.

All religions will surely claim that can lead to such supreme realization, but from the point of our unique spiritual experience, we can positively proclaim that subtle ego sense or that sort of awareness of our achievement always remains which stops our spiritual advancement for the emancipation of the soul as Jeevanmukta or videhimukta.

Fortunately Gurudev Yogiji Maharaj by His grace, love and compassion has imparted a living life principle for attaining the unattainable which will positively and surely liberate the soul for the fullest multifarious enjoyment-not in the form of temporary sensual pleasures but in the pure form of eternal bliss. The mind, the chitta and antahakaran[2] said-'That is the ultimate goal-achievement and attainment of human beings-the purnayoga.[3] Let us therefore clebrate this Sharadpurnima as thanks giving to Almighty God for the love and intimacy with our Satpurusha and the Supramental reality. This Brahmavidya[4] is given on consignment basis to all, giving light like sun without reservations and expectations.

Divinity is within us and also without externally!

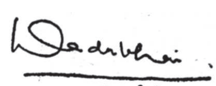

1. Communion with the Saint
2. The emotive mind
3. The integral yoga
4. Spiritual lore

❖ कुछ और मत खोज। केवल एक सत्पुरुष को खोज ले, इनके चरणों में सर्वभाव से सर्वस्व समर्पण कर दे और उनकी आज्ञानुसार कार्य करना प्रारम्भ कर दे। इसके बाद भी मोक्ष न मिले तो मुझ से ले जाना। इस प्रकार किसी न किसी समय करना पड़ेगा और कोई रास्ता ही नहीं है।

–श्रीमद् राजचन्द्रजी

❖ Spirituality can be communicated just as really as I can give you a flower.

– Swami Ranganathananda

❖ Constant repetition of God's name will free the mind from all its dynamics and make it perfectly still and Serene.

– Swami Ramdas

❖ The aim of ordinary life is to carry out one's duty (viz. Working for family, society, Country etc.), the aim of spiritual life is to realize the Divine.

–The mother
(Shri Aurobindo Ashram, Pondicherry)

व्रतोत्सवसूची

1.	दि.	13.10.77	गुरुवार	नवरात्रारंभ
2.	दि.	20.10.77	गुरुवार	नवमी, श्री स्वामिनारायण जयंती
3.	दि.	21.10.77	शुक्रवार	दशहरा
4.	दि.	22.10.77	शनिवार	एकादशी
5.	दि.	26.10.77	बुधवार	शरदपूर्णिमा, मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी का प्राकट्य दिन, प.पू. स्वामिश्री का दीक्षा दिन
6.	दि.	29.10.77	शनिवार	अनादि महामुक्त जागा स्वामी का प्राकट्यदिन
7.	दि.	30.10.77	रविवार	करवाचौथ
8.	दि.	7.11.77	सोमवार	एकादशी
9.	दि.	9.11.77	बुधवार	धनत्रयोदशी
10.	दि.	10.11.77	गुरुवार	कालीचौदस, दीपावली, शारदापूजन
11.	दि.	11.11.77	शुक्रवार	सोखड़ा मंदिर में अन्नकूटोत्सव
12.	दि.	12.11.77	शनिवार	नूतन संवत् 2034, भैयादूज
13.	दि.	15.11.77	मंगलवार	लाभपंचमी

साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदास जी द्वारा योगी डिवाईन सोसाईटी,
ए-103, अशोक विहार-III, दिल्ली-110052 फोनः 518838
मुद्रण स्थानः ठक्कर प्रिंटिंग प्रेस, 2588, बस्ती पंजाबियान, सब्जी मण्डी, दिल्ली-110077